श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में

उन्तीसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, 23 जुलाई से मंगलवार, 1 अगस्त, 06 तक)

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में रविवार, 23 जुलाई से मंगलवार, 1 अगस्त, 06 तक 29 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है।

शिविर में अध्यात्मजगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिलेगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं पण्डित अमृतभाई मेहता फतेपुर के निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी को धर्मलाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

देखना न भूलें

साधना चैनल पर प्रतिदिन रात्रि में 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : २४ २७६ अंक : १२

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

आचरणप्रज्ञापनाधिकार

उपधि के सद्भाव में आरंभ मूर्छा असंयम।
हो फिर कहो परद्रव्यरत निज आत्म साधे किसतरह?।।२२१।।
छेद न हो जिसतरह आहार लेवे उसतरह।
हो विसर्जन नीहार का भी क्षेत्र काल विचार कर।।२२२।।
मूर्छादि उत्पादन रहित चाहे जिसे न असंयमी।
अत्यल्प हो ऐसी उपधि ही अनिंदित अनिषिद्ध है।।२२३।।
जब देह भी है परिग्रह उसको सजाना उचित ना।
तो किसतरह हो अन्य सब जिनदेव ने ऐसा कहा।।२२४।।
लोक अर परलोक से निरपेक्ष है जब यह धरम।
पृथक् से तब क्यों कहा है नारियों के लिंग को।।२०।।•
नारियों को उसी भव में मोक्ष होता ही नहीं।
आवरणयुत लिंग उनको इसलिए ही कहा है।।२१।।•
प्रकृतिजन्य प्रमादमय होती है उनकी परिणति।
प्रमादबहुला नारियों को इसलिए प्रमदा कहा।।२२।।•
नारियों के हृदय में हों मोह द्वेष भय घृणा।
माया अनेकप्रकार की बस इसलिए निर्वाण ना।।२३।।•

• आचार्य जयसेन की टीका में प्राप्त २०-२३ गाथायें

एकांत में आत्मतत्त्व का अभ्यास करो

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 36 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

अभवच्चित्तविक्षेप एकांते तत्त्वसंस्थिति।
अभ्यस्येदभियोगेन योगी तत्त्वं निजात्मन: ।।

जिसके चित्त में राग-द्वेषादि विकारी परिणतिरूप क्षोभ-विक्षेप नहीं है तथा जो आत्मस्वरूप में भलेप्रकार स्थित है ह्न ऐसे योगी को सावधानीपूर्वक अर्थात् आलस्य, निद्रा आदि के परित्यागपूर्वक एकान्त स्थान में अपने आत्मतत्त्व का अभ्यास करना चाहिये।

(गतांक से आगे...)

हे जीवों ! यहाँ आत्मस्वरूप के अभ्यास की बात कह रहे हैं, अरहंत-सिद्धों के स्वरूप-अभ्यास की बात नहीं। मनुष्यभव प्राप्त करके आत्मस्वरूप का अभ्यास ही एकमात्र करनेयोग्य कार्य है। दुनिया की अन्य बातों को समझाने के लिये किया गया अभ्यास, वास्तविक अभ्यास नहीं है। आत्मस्वरूप का अभ्यास ही सच्चा अभ्यास है और वही जीव का मूल कार्य है। दुनिया इस बात को माने अथवा न माने, जाने अथवा न जाने, इससे तुम्हारा कोई संबंध नहीं है।

हे परमात्मा ! तेरी वस्तु तेरे पास ही है। तुझे मात्र उस ओर दृष्टि करना है। सर्वज्ञदेव कहते हैं कि मेरी ओर दृष्टि करने से तुझे तेरे स्वभाव की सन्मुखता नहीं होगी; किन्तु स्वभाव की ओर दृष्टि करेगा तो तुझे सुख की प्राप्ति अवश्य होगी।

जिसके चित्त में विक्षेप अथवा रागादि विकल्प नहीं है तथा श्रीगुरु के बताये अनुसार हेय-उपादेय तत्त्वों में जिसकी बुद्धि निश्चल हो गई है ह्न ऐसा योगी पुरुष ही आत्मा के अभ्यास में निश्चल हो सकता है।

शिष्य ने हेय-उपादेय तत्त्वों को दो भागों में विभक्त किया है ह्न 1) मोह-राग-द्वेष, शरीर, मकान, निमित्त आदि समस्त परपदार्थ मुझसे भिन्न हैं; अत: ये सब हेय

हैं, उपक्षेणीय हैं, लक्ष्य करनेयोग्य नहीं हैं। 2) मेरा चिदानन्दस्वरूप भगवान आत्मा ही उपादेय है, लक्ष्य करनेयोग्य है, आदरणीय है।

श्रीगुरु ने जिसप्रकार हेय-उपादेय तत्त्वों का स्वरूप बताया है। शिष्य ने उसका सम्पूर्ण भाव तदनुसार ही ग्रहण किया है। वहाँ निमित्त अथवा रागादि उसे किसी भी प्रकार की मदद कर सकते हैं ह्न ऐसी शंका उसे नहीं है।

ध्रुव-चिद्घन-परमस्वरूप-निजपरमात्मा ही साध्य है, साधनेयोग्य है, ध्यान करने योग्य ध्येय है, कायोत्सर्ग आदि द्वारा उस ध्येय में लीन हुये योगी ही वास्तविक रूप से आत्मा का सच्चा अभ्यास करते हैं। चित्त को स्थिर करके, स्वभावदृष्टिपूर्वक ही आत्मा का ध्यान किया जाता है।

इस इष्टोपदेश शास्त्र में श्रीगुरु आत्महित की बात समझा रहे हैं। देह में विराजमान यह आत्मा अतीन्द्रिय आनन्दस्वरूप तत्त्व है तथा देह-वाणी-मन, कर्म आदि समस्त परपदार्थ जड़ हैं। पुण्य-पापरूप विकारी भाव दु:खरूप हैं ह्न ऐसे विकारीभाव और जड़ पदार्थों से जिसकी रुचि हट गई और आत्मा की रुचि जागृत हो गई, उसे अंतरस्वभाव में एकाग्र होने की भावना होती है। उसमें एकाग्रता करने की रीति ही इस गाथा में बताई गयी है।

जिसे ' मैं ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा हूँ' ह्न ऐसी रुचि, प्रतीति और विश्वास आता है, उसे ऐसा निश्चय हो जाता है कि पुण्य-पापरूप विकारीभाव और जड़-सामग्री से मुझे कभी सुख नहीं मिलेगा । वहाँ आत्मा की रुचि अनुसार उसका वीर्य भी अवश्य काम करता है।

जीव को धर्मदृष्टि प्रगट होते ही ऐसा नक्की हो जाता है कि मैं ही मेरा आधार हूँ, मैं ही मेरा शरण हूँ और मैं ही उत्तम पदार्थ हूँ; क्योंकि इसके बगैर सब कुछ मिथ्या है, थोथा है। क्रियाकाण्ड, दया-दान भक्ति में हित माननेवाला जीव आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्दस्वरूप अनाकुल सुख को नहीं जानता, जब कि धर्मी जीव अन्तर एकाग्रता पूर्वक एकमात्र सुखस्वरूप आत्मतत्त्व का श्रद्धान करता है। उसके मन में ऐसा विकल्प भी नहीं आता कि परपदार्थ अथवा रागादि में सुख है या नहीं। उसकी दृष्टि हेय-उपादेय तत्त्वों में निश्चल हो गई है।

सर्वज्ञदेव, आचार्य एवं आगम का यह उपदेश है कि हे जीव ! तेरे आत्मा में ही तेरा सुख है; अत: उसे ही उपादेय मान ! उसका ही आदर कर ! और दु:खरूप रागादि तत्त्वों को हेय मान; इसतरह भगवान सर्वज्ञ देव के उपदेश को श्रवण कर जो आत्मरूचि करता है, आत्मदृष्टि करता है, उसे ही भगवान की वास्तविक शरण कही जाती है।

जिसप्रकार अज्ञानी जीव को अनादि से शरीर और रागादि में अपनेपन की रट लगी है, उसीप्रकार धर्मी जीव को आनन्दस्वरूप निज आत्मा में अपनेपन की दृढ स्थिति हुई है। उसके लिये एक आत्मा ही उपादेय है और शेष रागादि सभी हेय हैं; इसतरह उसकी बुद्धि निश्चल हो गई है।

धर्मी जीव जब कायोत्सर्ग में लीन होता है, तब काया माने शरीर-वाणी-मन, पुण्य-पापादि के भावों आदि सभी से रहित होकर चिदानन्दस्वरूप भगवान आत्मा में एकाग्र होता है। इसप्रकार वह आत्मा अंतर में ही व्यवस्थित हो जाता है।

इष्टोपदेश में मात्र 51 गाथायें हैं; किन्तु इतने में ही आचार्यदेव ने जिनेन्द्र परमेश्वर की वाणी का सार भर दिया है। यह पूज्यपादस्वामी ने हितकारी उपदेश दिया है, इसलिये शास्त्र का नाम इष्टोपदेश है।

अपने भगवान आत्मा में ही जिसने योग जोड़ा है, वह भले ही गृहस्थाश्रम में हो; उसे रागादि विकल्प सुहाते नहीं हैं, रुचते नहीं हैं।

योगी एकांत स्थान पर ध्यान करते हैं। जैसे किसी व्यक्ति को पाँच-पच्चीस लाख रुपयों का निधान प्राप्त हो जावे तो वह किसी को कहता नहीं है; किन्तु एकान्तस्थान पर उसे भोगता अवश्य है; उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि योगी पुरुष एकान्तस्थान में आत्मनिधान का भोग करता है। वह बाह्य में प्रतिकूलतारूप कोलाहल और अन्तर में रागादिरूप कोलाहल से रहित एकान्तस्थान में ध्यान करता है। पर्वत की गुफा आदि एकान्तस्थान में आलस और निद्रारहित होकर, वह योगी अपने को परमप्रिय लगनेवाले आत्मा में लीन होता है।

तीनलोक के नाथ सर्वज्ञ भगवान कहते हैं कि भाई ! तेरे अन्तर में अतीन्द्रिय आनन्द, अतीन्द्रिय ज्ञान, अतीन्द्रिय शांति, अतीन्द्रिय वीर्य, अतीन्द्रिय प्रभुता

आदि अनन्तगुण रत्नों का निधान भरा हुआ है। उसकी रुचि लेकर उसमें ही एकाग्र हो, उसे ही भोग ! और अतीन्द्रिय आनन्द से तृप्त हो जा !

यहाँ भगवान कहते हैं कि समय रहते सावधान होकर आत्मा में वर्तन करे तो तुझे अतीन्द्रिय महाआनन्द प्राप्त हो जाये।

यह तो ऐसी बात है कि सब लोगों को समझ में आये। अत: ऐसा नहीं समझना चाहिये कि मैं बालक हूँ अथवा वृद्ध हूँ, इसलिये समझ नहीं सकता। क्या बालक अथवा वृद्ध आत्मा नहीं है ? आत्मा तो त्रिकाल समझनेवाला तत्त्व है। आप अभी नहीं समझेंगे तो इस मनुष्यभव में दुबारा समझने का अवसर कहाँ मिलेगा ? इस उत्तम भव में भी यह सत्य बात समझ में न आवे अथवा दृष्टि में नहीं आवे तो यह भव किस काम का ? पाँच-पचास लाख रुपया मिल गया तो वह तो पूर्व पुण्य के कारण प्राप्त हुआ है और यदि पुण्य चला जाये तो उसमें तुझे क्या मिलेगा ? भाई ! तूने तो कमाने का भाव करके पाप बाँध लिया। कभी-कभी दया-दान-भक्ति आदि माध्यम से पुण्यबंध किया तो भी उसमें तेरा धर्म कहाँ आया ? पुण्य-पाप के विकल्पों से पार निज शुद्ध चैतन्यतत्त्व का अनुभव करना ही तेरा धर्म है, संवित्ति है।

यहाँ शिष्य प्रश्न करता है कि देह-वाणी-मन और रागादि की रुचि छूटकर स्वयं को चैतन्यस्वभाव की रुचिपूर्वक अनुभव हुआ ह्न ऐसी खबर योगी को किस प्रकार होगी कि मुझे आत्मा का अनुभव हुआ ? शांति प्रगट हुई ? और इस अनुभव में प्रतिसमय उन्नति हो रही है, इसकी खबर भी कैसे होगी ? शुद्धात्मा का अनुभव और उसमें होनेवाली वृद्धि को जानने के लिये क्या लक्षण है ? मुझे परभावों का वेदन छूट गया और आत्मसंवित्ति का वेदन हुआ ह्न यह कैसे जानें ?

शिष्य का प्रश्न समझकर आचार्यदेव कहते हैं कि हे बुद्धिमान ! तेरा प्रश्न ठीक है। समझ ! मैं तुझे जानने का लक्षण बताता हूँ। जिसप्रकार व्यापार में धन मिले और व्यापार की वृद्धि होती है तो पता चलता है न ! उसीप्रकार इस धर्म के व्यापार में भी आनन्द का अनुभव होता है, वृद्धि होती है। इसका सुन्दर लक्षण आगामी 37 वीं गाथा में कहेंगे। ●

विभाव पर्याय और स्वभाव पर्याय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 15 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथायें मूलत: इसप्रकार है ह्न

णरणारयतिरियसुरा पज्जाया ते विहावमिदि भणिदा।
कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया ते सहावमिदि भणिदा ।।15।।

मनुष्य, नारक, तिर्यंच और देवरूप पर्याय विभाव पर्याय कही गई है और कर्मोपाधिरहित पर्याय स्वभाव पर्याय कही गई है।

(गतांक से आगे...)

स्वयं परमब्रह्मस्वरूप समयसार को तू भज ही रहा है; परन्तु अब उसे शीघ्र ही उग्ररूप से भज ! साधकदशा तो है; परन्तु उग्ररूप से कारणपरमात्मा में लीन हो जा ! तू स्वयं ही वह कारणसमयसार है।

यहाँ स्वयं ही अपनी आत्मा को सम्बोधन करके कहते हैं कि ह्न हे आत्मा ! तू अपने जिस कारणसमयसार को भजता है, उसे शीघ्र उग्ररूप से भज ! यहाँ कारणसमयसार को भजनेवाले तथा उसकी श्रद्धा-ज्ञान करनेवाले को भव्यशार्दूल कहा है।

क्वचिल्लसति सद्गुणै: क्वचिदशुद्धरूपैर्गुणै:।
क्वचित्सहजपर्ययै: क्वचिदशुद्धपर्यायकै: ।।
सनाथमपि जीवतत्त्वमनाथं समस्तैरिदं।
नमामि परिभावयामि सकलार्थसिद्धयैसदा ।।26।।

जीव तत्त्व क्वचित् सद्गुणों सहित विलसता है, दिखाई देता है, क्वचित् अशुद्धरूप गुणों सहित विलसता है, क्वचित् सहजपर्यायों सहित विलसता है और क्वचित् अशुद्ध पर्यायों सहित विलसता है। इन सबसे सहित होने पर भी जो इन सबसे रहित है ह्न ऐसे इस जीव तत्त्व को मैं सकल अर्थ की सिद्धि के लिये सदा नमता हूँ, भाता हूँ।

ऐसे गुण पर्यायों से सहित होने पर भी अर्थात् पर्याय में शुद्ध-अशुद्ध पर्यायों के प्रकारों से सहित होने पर भी; उन सबसे रहित त्रिकाली निरपेक्ष एकरूप जीवतत्त्व को मैं सदा नमता हूँ, भाता हूँ।

शुद्ध और अशुद्ध पर्याय के ऊपर लक्ष्य नहीं है, इसलिये कहा है कि उससे त्रिकाली आत्मतत्त्व रहित है। पर्याय में शुद्धता-अशुद्धता होने पर भी द्रव्यदृष्टि में उससे रहित शुद्ध जीवतत्त्व को मैं अपनी मुक्ति के लिये सदा नमता हूँ, भाता हूँ। ऐसी आत्मा की श्रद्धा, ज्ञान और रमणतारूप भावना ही मुक्ति का कारण होती है।

अब पन्द्रहवीं गाथा में सूक्ष्म तथा अलौकिक बात चलेगी। ध्यान रखना यहाँ पर्याय की बात है, इसमें कारणशुद्धपर्याय की बात भी लेंगे। आत्मा की पर्यायों में स्वभावपर्याय और विभावपर्याय ह्न ऐसे दो भेद हैं।

कारणशुद्धपर्याय और कार्यशुद्धपर्याय गुण की बात नहीं है; पर्याय की ही बात है। आत्मा में कारणशुद्धपर्याय त्रिकाल है और कार्यशुद्धपर्याय नवीन प्रकट होती है।

यहाँ महामुनि पद्मप्रभमलधारिदेव एक अलौकिक रहस्य उद्घाटित करते हैं कि जिसप्रकार धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये चारों द्रव्य त्रिकाल शुद्ध हैं और पर्याय में भी एक धारापने अखण्ड, एकरूप वर्तते हैं, इनकी पर्याय में विषमता नहीं है; उसीप्रकार आत्मा में बसी एकरूप पर्याय यहाँ बतलानी है।

संसार, मोक्षमार्ग और मोक्ष ह्न ऐसी पर्यायों में अनेकरूपता/विषमता है; जबकि आत्मा त्रिकाल शुद्ध है। उस शुद्ध स्वभाव के साथ त्रिकालध्रुवरूप रहनेवाली, अव्यक्त रूप से वर्तमान वर्तती, व्यक्तरूप उत्पाद-व्यय से रहित अखण्ड कारणशुद्धपर्याय अनादि-अनंत है।

धर्मास्तिकाय आदि में होनेवाली पर्यायों में तो उत्पाद-व्यय है; परन्तु वह एकरूप परमपारिणामिकधारा से है। पुद्गल में खण्ड-खण्ड और भंगरूप पर्यायें हैं, उसमें तो एक छोटे परमाणु में भी विषमपर्यायें होती हैं; परन्तु जीव में धर्मास्तिकाय आदि की तरह एक त्रिकाल परमपारिणामिकभावरूप पर्याय है, उसे यहाँ बता रहे हैं।

आत्मा के त्रिकालस्वभाव अनुसार ही उसकी परिणति त्रिकाल एकरूप वर्तती है। चैतन्य आत्मा की संसार, मोक्षमार्ग और मोक्षपर्याय तो विषम है; परन्तु उस

प्रत्येक पर्याय के समय अर्थात् निगोद से सिद्धपर्याय तक प्रत्येक समय अव्यक्तरूप पारिणामिकधारा से अनादि अनंत एकपरिणति रहती है, वह शुद्धनिश्चयनय का विषय है।

संसार, मोक्ष तो व्यवहारनय के विषय हैं और त्रिकाल ध्रुवस्वभाव और उसके साथ वर्तती हुई ध्रुवपरिणति निश्चयनय का विषय है। अनादि-अनंत स्वभाव चतुष्टय के साथ वर्तती सहज परिणति ही कारणशुद्धपर्याय है। उसी का यहाँ वर्णन चल रहा है। प्रथम स्वभाव चतुष्टय को बताते हैं ह्न

अनादि-अनंत, अमूर्त्त, अतीन्द्रिय स्वभाववाला शुद्ध सहजज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीतरागसुखात्मक स्वभाव अनंत चतुष्टय त्रिकाल है। संसार-मोक्षमार्ग तथा मोक्ष पर्याय को गौण करके त्रिकाल एकरूप सहजज्ञान-दर्शन-चारित्र और आनंदरूप स्वभावअनंतचतुष्टय आत्मा का स्वरूप है। उस त्रिकाली स्वरूप चतुष्टय के साथ रहनेवाली पूजित पंचमभाव परिणति कारणशुद्धपर्याय है।

आत्मा = द्रव्य, स्वभाव अनंतचतुष्टय = गुण और उनके साथ रहनेवाली परम पारिणामिकभाव से वर्तती हुई परिणति = कारणशुद्धपर्याय है। यह कारणशुद्धपर्याय सहज शुद्ध निश्चयनय का विषय है। सभी आत्माओं में यह कारणशुद्धपर्याय एकधारारूप से अनादि-अनंत वर्त रही है। उसमें कोई भेद नहीं पड़ता।

उत्पाद-व्ययरूप पर्याय में होनेवाला राग-द्वेष, मोक्षमार्ग अथवा मोक्ष तो विषमरूप है; एकधारारूप नहीं है, उसमें तो कर्म की उपाधि है, जबकि यह सहज शुद्धकारणपर्याय कर्म की उपाधि से विवर्जित है।

मूलसूत्र में **कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया** कहा है। उसमें से टीकाकार ने यह कारणशुद्धपर्याय निकाली है। कार्यशुद्धपर्याय में तो कर्म के अभाव की अपेक्षा आती है; परन्तु द्रव्य के साथ ही एकरूप रहनेवाली अभेद कारणशुद्धपर्याय में कर्म के अभाव की अपेक्षा भी नहीं आती, वह तो त्रिकाल निरपेक्ष है।

जैसा सामान्यशक्तिरूप त्रिकालस्वभाव है, वैसा ही उसका परिणतिरूप स्वभाव भी वर्तमान एकधारारूप शुद्ध वर्तता है। उसमें एकाग्रता करने पर मोक्षमार्ग और मोक्ष प्रकट होता है। **(क्रमशः)**

छहढाला प्रवचन

श्रीगुरु का जीवों को सुखकर उपदेश

जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दुःखतें भयवन्त।
तातैं दुःखहारी सुखकार, कहें सीख गुरु करुणाधार।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

हे जीव ! मिथ्यात्व के कारण चार गति के अनन्त दुःख तूने भोगे; अब परम सुखरूप मोक्ष की प्राप्ति के लिए तू सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को अंगीकार कर !

अरे ! सुख के लिए जगत के जीव कितने आकुल-व्याकुल हो रहे हैं ! वे कल्पना करते हैं कि रुपयों में से सुख ले लूँ। अच्छे शरीर में से या महल में से सुख ले लूँ। ऐसे बाह्य में सुख की खोज करते हैं। यहाँ तक कि घर-बार छोड़कर, शरीर को भी छोड़कर (आपघात करके भी) सुखी होना व दुःख से छूटना चाहते हैं। अतः यहाँ कहा कि ह्न **जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दुःखतें भयवन्त।**

कौन ऐसा है, जो सुख को न चाहे? सुख की जिसे इच्छा न हो, वह या तो सिद्ध-वीतराग या जड़ होगा । एकेन्द्रियादि जीवों को यद्यपि मन या विचारशक्ति नहीं है, किन्तु अव्यक्तरूप से वे भी सुख को ही चाहते हैं। इसप्रकार जगत के अनन्त जीवों के सुख को ही चाहना है और दुःख का त्रास है। सुख को चाहते हुए भी यह नहीं जानते कि सच्चे सुख का क्या स्वरूप है और कैसे उपाय से वह प्रगटे? अतः यहाँ श्रीगुरु इसका उपदेश देते हैं।

गुरु कहने से रत्नत्रयगुण के धारक दिगम्बर सन्त आचार्य यहाँ मुख्य हैं। ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूपी गुणों में जो अधिक हैं, बड़े हैं ह्न ऐसे गुरुओं ने वीतराग-विज्ञानरूप मोक्षमार्ग का उपदेश देकर जगत के जीवों के ऊपर महान उपकार किया है। उनको ऐसा शुभराग था और जगत के जीवों का ऐसा सद्भाग्य था, जिससे कुन्दकुन्दादि गुरुओं ने जगत को मोक्षमार्ग का उपदेश दिया है। कुन्दकुन्द स्वामी स्वयं कहते हैं कि मेरे गुरुओं ने मेरे ऊपर अनुग्रह करके मुझे शुद्धात्मा का उपदेश दिया है, उसी के अनुसार मैं इस समयसार में शुद्धात्मा दर्शाता हूँ; इसे हे भव्यजीवों ! तुम उसे अपने स्वानुभव से जानो।

श्रीमद् राजचन्द्रजी भी **आत्मसिद्धि** में कहते हैं कि अरे ! अज्ञानी जीव बाह्यक्रिया को एवं बाहरी शुष्क ज्ञानपने को धर्म या मोक्षमार्ग मान रहे हैं। उन्हें देखकर ज्ञानी को करुणा आती है; अतः उन्होंने जगत को सच्चा मोक्षमार्ग समझाया है। अपने आत्मा का स्वरूप न समझने से जीव ने अनन्त दुःख पाया। अब वह स्वरूप श्रीगुरु तुझे समझाते हैं; इसको समझने से तेरा परम कल्याण होगा और तेरा दुःख मिटेगा।

वाह ! वीतरागमार्गी सन्तों ने स्वयं मोक्षमार्ग साधते हुए जगत को भी हित का उपदेश देकर मोक्षमार्ग दिखाया है। अरे प्राणियों ! तुम अपने हित के लिए आत्मा का स्वरूप समझो ! पण्डित दौलतरामजी कहते हैं कि ह्न इसप्रकार श्रीगुरुओं ने आत्मा का भला होने के लिए जो हितोपदेश दिया, वही मैं इस छहढाला में कहता हूँ।

भले यह शास्त्र छोटा है; किन्तु इसमें भी, जो उपदेश बड़े-बड़े मुनियों ने दिया है, उसी के अनुसार मैं कहूँगा, उनसे विपरीत कुछ नहीं कहूँगा।

जो जीव आत्मा का गरजवान होकर आया है, अपने हित के लिए धर्म का जिज्ञासु होकर आया है ह्न ऐसे जीव के लिए यह बात है। जिसको अपने हित के लिए कुछ दरकार ही न हो ह्न ऐसे जीव के लिए तो क्या कहना? पण्डित टोडरमलजी मोक्षमार्ग-प्रकाशक में कहते हैं कि जो धर्म का लोभी हो, धर्म का वांछक हो, धर्म समझने का गरजवान हो ह्न ऐसे जीव को आचार्य धर्मोपदेश देते हैं। आचार्य परमेष्ठी मुख्यरूप से तो निर्विकल्प स्वरूपाचरण में ही निमग्न हैं, परन्तु कदाचित् धर्मलोभी आदि अन्य जीवों को देखकर राग के उदय से करुणाबुद्धि होने पर उनको धर्मोपदेश देते हैं। अहा ! उन सन्तों का मुख्य काम तो निज स्वरूप में लीन होकर परमानन्द साधने का है, परन्तु क्वचित् विकल्प का उत्थान होने पर धर्मोपदेश देते हैं।

अरे ! ऐसे उपदेशदाता गुरु का योग मिलने पर भी जो जीव यह उपदेश न सुने, उसे तो आत्मा की दरकार ही नहीं, संसार के दुःख से अब भी वह थकित नहीं हुआ। यहाँ तो ऐसे जिज्ञासु जीव के लिए यह बात है, जो संसार-भ्रमण से थककर आत्मा की शांति लेना चाहता हो। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जैसा भाव करे वैसा होता है या जो होना होता है वह होता है ?

उत्तर : होना हो वही होता है, परन्तु करता है इसलिये होता है। जो होनेवाला था, उसका कर्त्ता होकर करता है। वास्तव में तो जो स्वभाव का निर्णय करे उसको जो होना था, सो हुआ। ज्ञायक स्वभाव की दृष्टि करे तभी होना होगा, वही होगा, इसप्रकार सम्यक्निर्णय होता है।

प्रश्न : होना होगा तो होगा, ऐसा मानने पर पुरुषार्थ निर्बल पड़ जाता है न ?

उत्तर : जब पर्याय का लक्ष्य द्रव्य के ऊपर जाये तब सम्यक् निर्णय होता है; अत: होना होगा, वही होगा ह्न ऐसा स्वीकारने में विशेष पुरुषार्थ है।

प्रश्न : जब आत्मा ज्ञायक ही है तो फिर और क्या करना ?

उत्तर : भाई ! तू ज्ञायक ही है ह्न ऐसा निर्णय कर ! ज्ञायक तो है; परन्तु उस ज्ञायक का निर्णय नहीं है। वह निर्णय तुझे करना है। पुरुषार्थ करूँ.. करूँ.. परन्तु यह पुरुषार्थ तो द्रव्य में भरा है। बस, द्रव्य के ऊपर लक्ष्य जाते ही वह पुरुषार्थ प्रकट हो जाता है। जब द्रव्य के ऊपर लक्ष्य जाता है, तब सभी कुछ जैसा है, वैसा है, इसप्रकार मात्र जानता है। पर का तो कुछ पलटना है नहीं और स्व का भी कुछ पलटना नहीं है। स्व का निर्णय करते ही दिशा पलट जाती है।

प्रश्न : पर्याय तो व्यवस्थित ही होनेवाली है अर्थात् पुरुषार्थ की पर्याय तो जब उसके प्रकट होने का काल आयेगा तभी प्रकट होगी ह्न ऐसी स्थिति में अब करने को क्या रह गया ?

उत्तर : व्यवस्थित पर्याय द्रव्य में है; अत: द्रव्य के ऊपर दृष्टि करना है, पर्याय के क्रम के ऊपर दृष्टि न करके क्रमश: पर्याय जिसमें से प्रकट होती है ह्न ऐसे द्रव्य सामान्य के ऊपर दृष्टि करनी है; क्योंकि उसपर दृष्टि करने में अनंत पुरुषार्थ आ जाता है। क्रमबद्ध के सिद्धान्त से अकर्तापना सिद्ध होता है।

40 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 880 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में 38 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 176 एवं बाल कक्षाओं में 120 विद्यार्थी सम्मिलित। * शिविर में 72 हजार, 270 रुपयों का सत्साहित्य एवं 880 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

देवलाली (महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा आयोजित 40 वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के समाचार जून अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं। विस्तृत समाचार इसप्रकार हैं ह्न

प्रात: कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन प्रात: आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार के बंधाधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा पाँच दिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के स्वरचित नींव का पत्थर पुस्तक पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों के पूर्व पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर, पण्डित दिनेशभाई शाह, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् टी.वी. पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण किया जाता था।

दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न पण्डित आलोकजी शास्त्री, पण्डित संजयजी राऊत, पण्डित राजेन्द्रजी बंसल, पण्डित इन्द्रजीतजी गंगवाल, पण्डित नरेन्द्रजी जैन, पण्डित प्रदीपजी माद्रप, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री, पण्डित संतोषजी दहातोंडे, पण्डित बी.जी. श्रीपालजी, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी संघई, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित प्रशान्तजी मोहरे एवं पण्डित संतोषजी सावजी के विविध विषयों पर प्रवचन हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें ह्न बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्यकक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के निर्देशन में पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि तथा पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के सहयोग से पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा ली गई।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि ने ली।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में ह्न पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित सुनीलकुमारजी

जैनापुरे राजकोट, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती राजकुमारीबेन, श्रीमती लताजी जैन एवं श्रीमती रंजनाजी बंसल का विशेष सहयोग रहा।

प्रौढ़ कक्षायें ह्न नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, **गुणस्थान विवेचन** एवं **रत्नत्रय की पूर्णता** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन, **कारण-कार्य रहस्य** एवं **करणानुयोग परिचय** की कक्षा डॉ. उज्ज्वलाजी शहा, **लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका** की कक्षा पण्डित दिनेशभाई शहा, **क्रमबद्धपर्याय** की कक्षा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, **तत्त्वज्ञान पाठमाला** की कक्षा पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री एवं **छहढाला** की कक्षा पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने ली।

प्रात: 5.30 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा व पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा द्वारा ली गई।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में किया गया।

अन्य गतिविधियाँ ह्न प्रतिदिन ब्र. यशपालजी जैन के निर्देशन में कण्ठपाठ का आयोजन होता था। रात्रि में डॉ.शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गए।

शिविर के दौरान एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित पश्चाताप खण्डकाव्य का उन्हीं के सान्निध्य एवं मार्मिक उद्बोधन सहित पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट के मधुर स्वरों में पाठ किया गया।

विमोचन : शिविर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर लिखित **ज्ञायकभाव प्रबोधिनी हिन्दी टीका ग्रन्थ**; पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित जिन खोजा तिन पाईयाँ एवं ये तो सोचा ही नहीं; ब्र. यशपालजी जैन की गुणस्थान विवेचन (गुजराती) एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा लिखित शब्दों की रेल तथा जैन जी.के. भाग 3 व 4 का विमोचन हुआ।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन ह्न 26 मई को दोपहर में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता एवं श्री सुमनभाई दोशी राजकोट के मुख्यातिथ्य में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन ज्ञायक जैन देवलाली एवं कु. खुशबु मेहता भायन्दर-मुम्बई ने किया।

दीक्षान्त एवं समापन समारोह ह्न दिनांक 26 मई को रात्रि में ही शिविर का दीक्षान्त एवं समापन समारोह सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि श्री सुमनभाई दोशी थे। इनके अतिरिक्त समस्त विद्वतगण एवं अध्यापकगण भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया तथा शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई ने बाल कक्षाओं के छात्रों की रिपोर्ट व परिणाम प्रस्तुत किया। बालबोध प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** श्रीमती श्रुति-अभय जैन खैरागढ़ एवं श्रीमती तृप्ति-वीरेन्द्रकुमार जैन इन्दौर, **द्वितीय स्थान** डॉ. रेखा-नवनीत जैन पुणे तथा **तृतीय स्थान** कु. मंजुषा भरत सावजी देवलगांवराजा ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** ज्ञायक-अभयजी शास्त्री देवलाली, **द्वितीय स्थान** कु. खुशबु मेहता भायंदर एवं **तृतीय स्थान** अनुराग जैन भगवाँ ने प्राप्त किया। उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

समारोह का कुशल संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

विदेश कार्यक्रम

1. पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली विगत तीन वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। इस वर्ष दिनांक 23 जून से 11 अगस्त, 2006 तक उनका नगरवार विदेश कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न 23 जून से 29 जून **डलास**, 30 जून से 3 जुलाई **हर्टफोर्ड**, 4 जुलाई से 8 जुलाई **ओरलैण्डो**, 9 जुलाई से 16 जुलाई **मियामी**, 17 जुलाई से 24 जुलाई **चारलोएट**, 25 जुलाई से 2 अगस्त **शिकागो**, 3 अगस्त से 11 अगस्त **लन्दन**।

2. पण्डित दिनेशभाई एवं डॉ. उज्ज्वला शहा, मुम्बई दिनांक 3 अगस्त से 16 अक्टूबर, 2006 तक धर्म प्रचारार्थ अमेरिका एवं इंग्लैण्ड के विविध नगरों में जा रहे हैं। उनका नगरवार कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न 3 अगस्त से 11 अगस्त **लंदन**, 11 अगस्त से 17 अगस्त **पिट्सबर्ग**, 17 अगस्त से 21 अगस्त **कनाडा**, 21 अगस्त से 28 अगस्त **मियामी**, 28 अगस्त से 9 सितम्बर (दसलक्षण पर्व में) **वाशिंगटन डी.सी.**, 9 सितम्बर से 18 सितम्बर **राले**, 18 सितम्बर से 25 सितम्बर **अटलाण्टा**, 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर **शिकागो**, 2 अक्टूबर से 7 अक्टूबर **डलास**, 8 अक्टूबर और 9 अक्टूबर **वेको**, 10 अक्टूबर से 16 अक्टूबर **डलास**।

दसलक्षण हेतु आमंत्रण भेजें

दसलक्षण पर्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें; ताकि निर्धारित स्थानों की सूची शीघ्र प्रकाशित की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता पिनकोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी कोड सहित लिखें।

वेदी शिलान्यास सम्पन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम सिद्धायतन में दिनांक 1 जून, 06 को गुरुदत्त भगवान की वेदी एवं आत्मन् निकेतन (त्यागी भवन) का शिलान्यास हसुमतिबेन जगदीशभाई लोदरिया परिवार मुम्बई के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास के पूर्व दिनांक 31 मई को पंच परमेष्ठी विधान रखा गया। कार्यक्रम में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित कोमलचन्दजी टडा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अरुणजी मोदी सागर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ आदि विद्वानों का सान्निध्य मिला।

हार्दिक बधाई

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.), नई दिल्ली द्वारा लेक्चररशिप के लिये आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **राजेन्द्र शास्त्री खड़ैरी** का कनिष्ठ अनुसंधान छात्रवृत्ति (जे आर एफ) हेतु चयन हो गया है। साथ ही **संजीव शास्त्री खड़ैरी** एवं **नितिन शास्त्री विदिशा** ने भी नेट परीक्षा उत्तीर्ण की है।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

रजत जयन्ती महोत्सव मनाया

बिजौलियाँ (राज.) : यहाँ दिनांक 28 मई से 1 जून, 06 तक पण्डित कैलाशचन्दजी मंगलायतन की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री सीमंधर जिनालय का रजत जयन्ती महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

महोत्सव में प्रवचनार्थ डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित प्रहलादरायजी मन्दसौर, पण्डित संजयजी शास्त्री भैसरोडगढ, पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित रमेशजी जैन लाम्बाखोह पधारे। पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रथमानुयोग पर आधारित जैन कथाओं की संगीतमय प्रस्तुति की गई।

कार्यक्रमों में लगभग 900-1000 मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलियाँ के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **ह्न रमेश धनोप्या**

स्वाध्याय मंदिर का उद्घाटन

आगरा (उ.प्र.) : गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती के अवसर पर 29 अप्रैल को एफ-837/2, तेजनगर, कमला नगर में नवनिर्मित पूज्य श्री वीर-सीमंधर-गौतम-कुन्दकुन्द-कहान स्वाध्याय मंदिर का उद्घाटन श्री पदमचन्दजी सर्राफ के करकमलों से किया गया। आत्महितार्थ रहनेवाले आत्मार्थीजनों को यहाँ नि:शुल्क आवास व भोजन की सुविधा है। **सम्पर्क सूत्र :** 94123 30893

वैराग्य समाचार

1. **विदिशा (म.प्र.) निवासी सि. गुलाबचन्दजी बडकुल** का दिनांक 13 मई, 2006 को शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल के लघु भ्राता थे। आपकी स्मृति में पंच दिवसीय शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

2. **मुम्बई निवासी श्री शांतिलालजी जबेरी** का शान्त परिणामों से देहावसान हो गया। आप जीवन पर्यंत वीतरागी तत्त्वज्ञान से जुड़े रहे। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के लिये आपका सदैव सहयोग रहता था।

3. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री संजयकुमारजी शास्त्री भोगांव (उ.प्र.) के पिता **श्री मुन्नालालजी जैन** का दिनांक 22 मई को देहावसान हो गया।

4. **देवलगांवराजा (महा.) निवासी पण्डित नेमचन्द धन्नुसावजी** डोणगांवकर न्यायतीर्थ का 74 वर्ष की आयु में दि. 21 मई को समाधिपूर्वक देहावसान हो गया है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से आप दसलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ तो जाते ही थे साथ ही अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी भी थे। श्री वसंतभाई दोशी के साथ मिलकर आपने तीर्थों के संरक्षण हेतु अपना विशिष्ट योगदान दिया।

5. **रत्नौद (म.प्र.) निवासी श्री फूलचन्दजी भैयाजी** का दिनांक 18 मई को शांत परिणामों से देह-विलय हो गया। आपका जीवन सादगीपूर्ण था। आप अध्यात्मप्रेमी, तत्त्वरुचिवाले एवं गुरुदेवश्री से विशेष प्रभावित थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही मंगल कामना है।

बाल संस्कार शिविरों के साथ मनाया श्रुत पंचमी पर्व

1. **खड़ैरी (म.प्र.) :** यहाँ जैन युवा शास्त्री परिषद्, खड़ैरी के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 4 जून,06 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन के प्रवचन एवं जिनधर्म प्रवेशिका की कक्षा के अतिरिक्त पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा बालकों की सामूहिक कक्षा एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला की कक्षा ली गई।

शिविर में पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित आशीषजी टीकमगढ़, पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा, पण्डित निखिलजी शास्त्री बण्डा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री दहेगाँव एवं पण्डित विवेकजी दलपतपुर द्वारा अध्यापन कार्य कराया गया।

2. **विदिशा (म.प्र.) :** यहाँ श्री शीतलनाथ दि. जैन मंदिर, अन्दर-किला में श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 28 मई से 1 जून,06 तक श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान एवं स्व. श्री सिंघई गुलाबचन्दजी बडकुल की स्मृति में णमोकार महामण्डल विधान व आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, ब्र. महेन्द्रजी इन्दौर, ब्र. अमित भैयाजी एवं स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

3. **खतौली (उ.प्र.) :** यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में श्रुत पंचमी के अवसर पर 29 मई से 5 जून,06 तक बाल संस्कार शिविर एवं नवलब्धि विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 108 मुनि श्री सम्यक्त्व भूषणजी महाराज के प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी के प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुआ। प्रतिदिन तीन समय विशेष बाल कक्षाओं का आयोजन होता था। विधान के कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित सोनू शास्त्री फिरोजाबाद ने सम्पन्न कराये।

4. **हिंगोली (महा.) :** यहाँ 27 मई से 2 जून, 06 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। प्रतिदिन दोनों समय पण्डित अशोकजी मांगुलकर के प्रवचनों के अतिरिक्त दोपहर में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर की पंच परावर्तन विषय पर कक्षा चली।

बाल कक्षायें पण्डित सचिनजी पाटनी कन्नड, पण्डित विवेकजी सातपुते, पण्डित शाकुलजी शास्त्री मेरठ, पण्डित राहुलजी अलवर, पण्डित आशीषजी रोकड़े, पण्डित एलमचन्दजी, पण्डित प्रजयजी द्वारा ली गई। शिविर-संचालन पं. अमोलजी संघई ने किया।

5. **दिल्ली :** यहाँ न्यू उस्मानपुरा में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 14 मई से 21 मई, 2006 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित मनोजजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा, पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा आदि विद्वानों के प्रवचन एवं बाल कक्षाओं का लाभ मिला। प्रात: पण्डित राकेशजी शास्त्री ने प्रौढ़ वर्ग के लिये छहढाला की कक्षा ली। **ह्न संजीव जैन**

श्री दिग. जैन एसोसिएशन, **लन्दन** के तत्त्वावधान में आयोजित

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(दिनांक 4 अगस्त से 9 अगस्त 2006 तक)

अत्यन्त हर्षोल्लास से सूचित कर रहे हैं कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग से **लन्दन** में भगवान महावीरस्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर का निर्माण हुआ है। इस जिनमंदिर में विराजमान होनेवाले वीतराग भाववाही जिनबिम्बों का छह दिवसीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनांक 4 अगस्त से बुधवार, दिनांक 9 अगस्त, 2006 तक सम्पन्न होने जा रहा है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की सम्पूर्ण विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना द्वारा पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन के निर्देशन में सम्पन्न करायी जायेगी।

इस पावन प्रसंग पर पूज्य गुरुदेवश्री के मंगलमय प्रवचनों के साथ-साथ अध्यात्मजगत के ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, बाल ब्र. हेमन्त ए.गाँधी सोनगढ़, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. किरीट पी. गोसलिया फिनिक्स-अमेरिका, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित बाबूभाई एन. मेहता फतेपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़ इत्यादि विद्वानों के माध्यम से स्वाध्याय एवं तत्त्वचर्चा का लाभ भी प्राप्त होगा।

आप सभी को इस महोत्सव में पधारने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

निवेदक : श्री दिगम्बर जैन एसोसिएशन, लन्दन